

भूकम्प : अप्रत्याशित की प्रत्याशा

प्रवीण कुमार

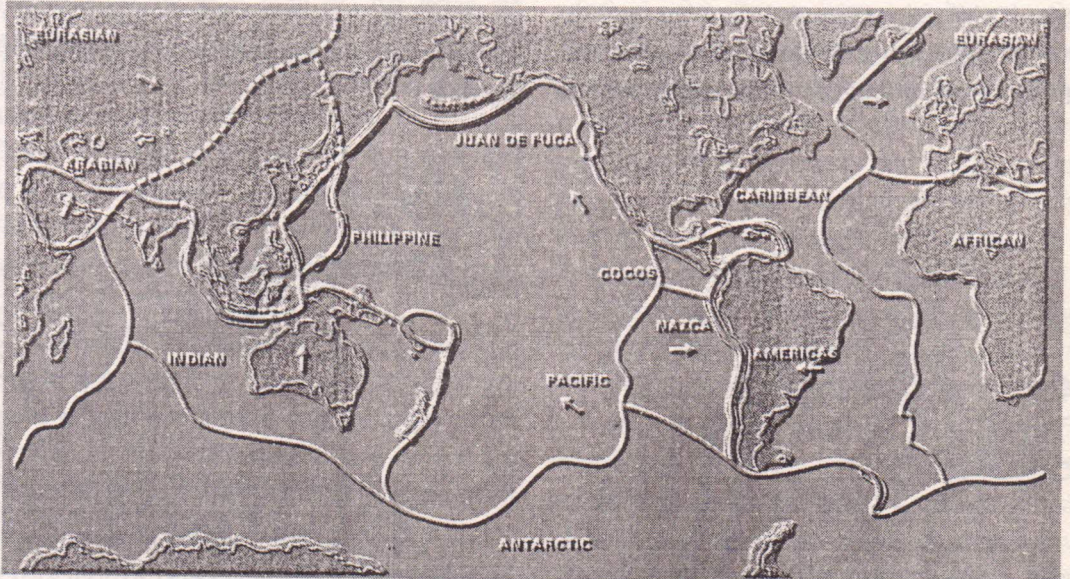
भूकम्प

वैज्ञानिक पृथ्वी के उस लम्बे-चौड़े भाग से वाकिफ हैं जहां भूकम्प आते हैं। लेकिन आने वाला अगला झटका कब, कहां और कितनी तीव्रता का होगा, यह बता पाना खासा मुश्किल है। ...दुनिया भर में भूकम्प की पूर्व सूचनाओं की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं।

दुनिया भर में हर साल लगभग दस लाख भूकम्प के झटके आते हैं। इनमें से लगभग पचास हजार झटकों की तीव्रता इतनी होती है कि वे मानव द्वारा महसूस किए जा सकते हैं। और लगभग सौ भूकम्प के झटके इतने तीव्र होते हैं कि वे जान-माल का काफी नुकसान कर सकते हैं। किसी निश्चित क्षेत्र में तीव्र भूकम्प के झटकों के आने के बीच का अन्तराल बहुत ज़्यादा होता है। हम कह सकते हैं कि दो तीव्र भूकम्प के बीच का समय मानव इतिहास के परे होता है। किन्तु भूगर्भीय इतिहास की दृष्टि में जो करोड़ों साल पुराना है, यह अंतराल पलक झपकने में लगे समय के बराबर होता है। भूकम्पों से सम्बंधित रिकॉर्ड केवल कुछ दशकों पूर्व से ही उपलब्ध हैं। इसलिए

मानव जाति के लिए भूकम्प अप्रत्याशित हैं जिनका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता।

आज के मौसम वैज्ञानिकों के पास सुपर कम्प्यूटर तथा मौसम सम्बंधी जानकारी के लिए छोड़े गए उपग्रह उपलब्ध हैं लेकिन फिर भी वे इस बात का पूर्वानुमान लगाने में असमर्थ हैं कि कहां, कब व कितनी वर्षा होगी। मौसम सम्बंधी पूर्वानुमान केवल 48 घण्टों तक ही काम आते हैं। मौसम वैज्ञानिकों के मुकाबले भूकम्प वैज्ञानिकों की स्थिति ज़्यादा डांवाडोल है। उनके पास अत्याधुनिक उपकरणों की कमी है। किन्तु इन सबके बावजूद हाल के कुछ वर्षों में भूकम्पों के पूर्वानुमान लगाने में थोड़ी सफलता मिली है।



धरती की प्लेटों की सीमाएं मोटी, उठी हुई लकीरों से दिखाई गई हैं। प्लेटों की गतियां तीर से दिखाई हैं। तुलना करें तो अफ्रीकी प्लेट सबसे स्थिर है। अमरीकी और यूरेशियाई प्लेट मध्य-अटलांटिक रिज से दोनों ओर दूर-दूर खिसक रही हैं। इससे धीरे-धीरे अटलांटिक महासागर फैल रहा है और प्रशांत महासागर संकरा होता जा रहा है।

